रवीन्द्र त्रिपाठी

दो कला संभावनाएं

पिछले हफ्ते दक्षिण दिल्ली के होटल शेरेटन में दो कलाकारों-विवेक निंबोलकर और सुरुचि आधारे जामकर की कलाकृतियों की प्रदर्शनी का नाम था-ब्यूटी इन एब्सट्रैक्शन यानी अंमूर्तन में सुंदरता। यह नाम क्यों था, यह समझ में नहीं आया। वजह यह कि इसमें सिर्फ विवेक निंबोलकर की कलाकृतियां ही अमूर्तन के दायरे में थीं। सुरुचि आधारे जामकर की कलाकृतियां आकृतिमूलक थीं। क्या कभी-कभी ऐसी भी होता है कि बिना मतलब समझे ही लोग प्रदर्शनी या कलाकृति का नाम रख देते हैं? क्या इस सिलसिले में यानी प्रदर्शनी के आयोजन को लेकर इस तरह की सजगता नहीं रखनी चाहिए? फिर भी कहना पड़ेगा कि नाम प्रसंग से उपजे विभ्रम को छोड़ दें तो दोनों कलाकारों की कलाकृतियां कलात्मक खूबसूरती की वजह से आकर्षित करने वाली थीं। हालांकि यह जरूर था कि एक होटल में प्रदर्शित होने की वजह से कलाकृतियों का आंतरिक सौंदर्य ठीक से उभर नहीं पा रहा था। लेकिन बड़े होटलों में ही कलाकृतियां खरीदने वाले ग्राहक जाते हैं। उनको लुभाना ही प्रदर्शनी का मकसद होता है।

विवेक रंगों से खेलने वाले एक अमूर्त कलाकार हैं। शोख और चटख रंग उनकी कलाकृतियों के मूल आधार हैं। साथ ही, वे अपने कैनवास पर ज्यामिति का पर्याप्त उपयोग करते हैं। संदेह नहीं कि उनके रंग कैनवास पर ज्यामितीय आकार इस तरह निखरते हैं कि रंगीन और मोहक दृश्यावली निर्मित हो जाती है। उनके ज्यादातर कैनवास दो भावों में विभाजित होते हैं। आधे में मुख्य रूप से सिर्फ रंगों का खेल होता है, और बाकी के आधे में ज्यामितीय आकार होते हैं-त्रिभुज या कुछ और। जैसे अर्ध चंद्रमा या बड़े विंदु। गहराई लाने या कला भाषा की शब्दावली में कहें तो टेक्स्चर पैदा करने के लिए वे कुछ युक्तियों का प्रयोग करते हैं। जैसे ऐसे छोटे-छोटे क्रमवार विंदु निर्मित करना जो सरल रैखिक संयोजन में हों अर्थात कैनवास पर रेखा की तरह लगें लेकिन साथ ही विंदु की स्वायत्तता बरकरार रहे। विवेक की कलाकृतियां अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। रंग संयोजन में उल्लास दिखता है।

पूना के कला विश्वकर्मा विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित कलाकार विवेक के व्यक्तित्व में भी जिंदादिली है। उनकी कलाकृतियों की तरह। यह बहस हो सकती है कि क्या ज्यामितीय आकार निर्मित करने वाला कलाकार पूरी तरह अमूर्त है? पर सैयद हैदर रजा पहले ही इस दिशा में मार्ग दिखा चुके हैं। रजा भी ज्यामितीय आकारों के चित्रकार थे पर भारत के ख्यातिनाम अमूर्त कलाकार थे।

इस प्रदर्शनी में शामिल दूसरी कलाकार सुरुचि का अलग तेवर और मिजाज है। उनकी कलाकृतियां आज के नारी विमर्श और बौद्धिक तेवर से उपजी हैं। उनकी यहां प्रदर्शित आधी कलाकृतियों में ऐसी औरतें हैं, जो सिर पर पगड़ी पहने हुए हैं। सुरुचि का कहना है कि पगड़ी उनके लिए महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है। आखिर, सिर्फ पुरुष ही पगड़ी क्यों पहनें? महिलाएं क्यों नहीं? संदेह नहीं कि सुरुचि नारी विमर्श के साथ-साथ आधुनिक किस्म का सत्ता विमर्श भी अपनी कलाकृतियों के माध्यम से सामने लाती हैं। उनकी बाकी कलाकृतियां कर्नाटक के हैंपी शहर की पुरातात्विक धरोहरों से प्रभावित हैं। हैंपी कर्नाटक का शहर है, जहां प्रचुर पुरातात्विक वैभव मौजूद है-मूर्तियां, भवन आदि। ऐसे शहर में जाना एक कलाकार के लिए आत्मसंधान का माध्यम भी बनता है। सुरुचि अलग-अलग स्रोतों से सामग्री लेती हैं। उन्हें अपने विचारों में ढालकर नई किस्म की कलात्मक संभावनाएं पैदा करती हैं। मुंबई के जेजे स्कूल ऑफ आर्ट की छात्रा रहीं सुरुचि आधुनिकता के कई प्रत्ययों को मिलाकर अपने लिए कला का नया मुहावरा विकसित कर रही हैं। इसमें संदेह नहीं।

■